वेद का काल

इस विषय में सब ऐतिहासिक एकमत हैं कि संसार का सबसे पुराना साहित्य वेद है और वह भारत में ही प्रकट हुआ। परन्तु वह कब प्रकट हुआ इसका निर्णय अभी तक भी निश्चितरूप से नहीं हो सका। मैक्समूलर वेद को १३०० ई० पू० का मानता है, विण्टरनिट्स ने २००० ई० पू० का माना है। जैकोबी वेद को ४५०० ई० पू० का बताता है, लोकमान्य ने वेद को ८००० ई० पू० का बताया है। अविनाश चन्द्रदास वेद को २५००० ई० पू० का मानते हैं।

वेदाङ्ग

वेदों का ठीक-ठीक उच्चारण और उनका सही तात्पर्य समझने के लिए ही वेदाङ्गों का प्रादुर्भाव हुआ है। वेद के छः[1] अङ्ग हैं—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। निरुक्त को वेद पुरुष का श्रोत्ररूप अङ्ग माना जाता है। निरुक्त के अध्ययन के बिना मनुष्य वेद के सम्बन्ध में कानों के होते हुए भी बहरा ही है। जैसे बहरे पुरुष के आगे स्वर ताल आदि के साथ किसी गीत का गान अरण्यरोदन मात्र है उसी प्रकार जिस पुरुष ने निरुक्त नहीं पढ़ा उस पुरुष के आगे किसी मन्त्र की व्याख्या भी एक तरह से अरण्यरोदन मात्र ही होगी, वह उसको ठीक तरह नहीं समझ सकेगा। निरुक्त के बिना स्वयं भी वह वेदार्थ नहीं समझ सकता। आधिभौतिक जगत् में विचरने वाला पुरुष प्रायः आधिभौतिक संस्कारों से ही ओतप्रोत रहता है, वह प्रत्येकमन्त्र के अर्थ को भौतिक दृष्टि से ही सोचने समझने का यत्न करता है, उसे यह विदित नहीं कि वेद में आधिदैविक और आध्यात्मिक अर्थों की भी चर्चा है। समस्त वैदिक विज्ञान देवतावाद पर आधारित है, वे देवता कितने हैं? उनका क्या स्वरूप है? वे चेतन हैं या अचेतन हैं? उनका क्या कर्तव्य है? इत्यादि बातों का ज्ञान

Scanned with CamScanner

वेदार्थ को समझने के लिए परमावश्यक है, इसका विस्तार से वर्णन निरुक्त में ही है। अतः वेदार्थ को समझने के लिए 'निरुक्त' का अध्ययन परमावश्यक है।

Scanned with CamScanner